श्रीसाथनो सिणगार
राग धनाश्री

जोगमाया नो देह धरीने, श्री स्यामाजी थया तैयार।
ततखिण तिहां तेणे ठामे, मारे साथे कीधो सिणगार।। १ ।।

कालमाया का तन छोड़कर योगमाया का तन धारण कर श्री श्यामाजी (इस तरह का शृंगार कर) तैयार हो गईं। तुरन्त उसी समय उसी स्थान पर सब साथ ने भी उसी प्रकार का शृंगार धारण किया।

सोभा सागर साथ तणी, सखी केणी पेरे ए वरणवाय।
हूं रे अबूझ कांई घणूं नव लहूं, एनो निरमाण केम करी थाय।। २ ।।

सुन्दरसाथ की शोभा सागर के समान है। मैं अबूझ हूं ज्यादा ग्रहण नहीं कर सकती। तो फिर पूरे समूह के रूप का वर्णन कैसे करूं?

कोटान कोट जाणे सूरज उदया, ब्रह्मांड न माय झलकार।
प्रघल पूर जाणे सायर उलट्यो, एक रस थई सर्वे नार।। ३ ।।

ऐसा लगता है मानो करोड़ों सूर्य एक साथ उदय हो गए हों और उनकी रोशनी ब्रह्माण्ड में नहीं समा रही हो। सुन्दरसाथ का एक-सा शृंगार देखकर ऐसा लगता है जैसे सागर में लहरों की बाढ़ आ गई हो।

एक नखतणी जो जोत तमे जुओ, तेमां कई ने सूरज ढंपाए।
केम करी सोभा वरणवूं रे सखियो, मारो सब्द न पोहोंचे त्यांहे।। ४ ।।

एक नाखून के तेज का इतना प्रकाश है कि कालमाया के करोड़ों सूर्यों का प्रकाश ढक जाता है। तो फिर, हे सुन्दरसाथजी ! इस सागर समूह (सुन्दरसाथ के शृंगार) की शोभा का वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

वली गुण जो जो तमें नखतणां, हूं तेहनो ते कहूं विचार।
सूरज दृष्टें तापज थाय, आणे अंग उपजे करार।। ५ ।।

अब नाखून के गुण की तरफ देखो तो इसको देखने से मन को आनन्द मिलता है, जबकि सूर्य को देखने पर तपन से मन पीड़ित होता है।

साथतणी रे साडियो ज्यारे जोइए, तेमां रंग दीसे अपार।
अनेक विधना जवेरज दीसे, करे ते अति झलकार।। ६ ।।

सुन्दरसाथ की साड़ियों को यदि देखें तो उनके रंग बेशुमार दिखाई देते हैं। उन साड़ियों में जड़े जवाहरात अति चमकते हैं।

तेवा सरूप ने तेवा भूखण, तेज तणा अंबार।
ए अजवालूं ज्यारे जीव जुए, त्यारे सूं करे संसार।। ७ ।।

जैसे सुन्दर स्वरूप सखियों के हैं, वैसे ही अनके भूषण तथा उनके बेशुमार (अनन्त) शोभा के तेज को जब कोई जीव देख ले, तो माया तुरन्त छूट जाएगी।

Nijanand App

मांहों मांहें वालाजीनी वातो, बीजो चितमां नथी उचार।
ततखिण वेण सांभलतां वल्लभ, खिण नव लागी वार।। ८ ।।

सुन्दरसाथ सदा आपस में वालाजी की ही बातें करते थे। उनके चित्त में और कुछ बोलने का विचार आता ही नहीं था। उसी समय वालाजी की बांसुरी की आवाज सुनते ही संसार छोड़ने में सखियों को एक पल नहीं लगा।

मन उमंग वालाजीसूं रमवा, आयत अति घणी थाय।
आनन्द मांहें अति उजाय, धरणी न लागे पाय।। ९ ।।

सखियों के मन में अपने धनी के साथ रास रमण करने की अति अधिक चाह थी, इसलिए वह आनन्द विभोर होकर ऐसी दौड़ रही थीं कि मानो उनके पैर धरती पर लग ही नहीं रहे हैं।

भूखण स्वर सोहामणा, मुख वाणी ते बोले रसाल।
ए स्वरने ज्यारे श्रवणा दीजे, त्यारे आडो न आवे पंपाल।। १० ।।

सखियों के मुखारबिन्द की रसभरी वाणी तथा उनके भूषणों के मधुर स्वरों को जब ध्यान से सुनें तो संसार आड़े नहीं आता, अर्थात् माया छूट जाती है।

साथ सकल मारा वाला पासे आव्यो, मन आणी उलास।
विविध पेरे वालाजीसुं रमवा, चितमां नथी मायानो पास।। ११ ।।

मन में अति उमंग से भरे साथ वालाजी के पास आए। उनके चित्त में अनेक प्रकार से रास रमण की चाहना थी और कोई माया का रंग नहीं था।

रस भर रंग वालाजीसुं रमवा, उछरंग अंग न माय।
इंद्रावती बाई कहे धामना साथने, हूं नमी नमी लागूं पाय।। १२ ।।

सखियों के मन में अपने धनी के साथ रमने के लिए (खेलने के लिए) उत्साह अंग में समाता नहीं। ऐसे धाम के सुन्दरसाथ के चरणों में श्री इन्द्रावतीजी झुक-झुककर प्रणाम करती हैं।

॥ प्रकरण ॥ ७ ॥ चौपाई ॥ २६७ ॥

श्रीराजजीनो सिणगार

पेहेलो सिणगार कीधो मारे वालेजीए, तेहेनो ते वरणवुं लवलेस।
पछे संवाद वालाजी साथनो, ते मारी बुध सांरूं कहेस।। १ ।।

कालमाया के ब्रह्माण्ड को छोड़कर योगमाया के ब्रह्माण्ड में सबसे पहले वालाजी ने प्रवेश कर योगमाया का नया तन धारण कर शृंगार किया। उसका थोड़ा-सा वर्णन श्री इन्द्रावतीजी करती हैं। इसके बाद सखियों और वालाजी में आपस में जो बातें हुईं, वह अपनी बुद्धि के अनुसार वर्णन करेंगी।

सोभा रे मारा स्याम तणी, सखी केणी पेरे वरणवुं एह।
सब्दातीत मारा वालाजीनी सोभा, मारी जिभ्या आंणी देह।। २ ।।

मेरे श्री राजजी महाराज के शृंगार की शोभा शब्दों से परे है। मेरी जुबान (जिह्वा) इस सांसारिक देह की होने से कैसे वर्णन करे?

Nijanand App